शोध-सार (Synopsis)

सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का शिशु मृत्यु-दर पर प्रभाव : भोजपुर जिला के सन्दर्भ में

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा

के

गृहविज्ञान विभाग (समाज विज्ञान संकाय)

में

पी-एच०डी० की उपाधि हेतु प्रस्तावित

शोध-प्रबन्ध की संक्षिप्त रूपरेखा

शोध-निर्देशक

Nikhat Perween

शोधार्थी

निकहत परवीन

रोल नं०-12

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा के समाजविज्ञान संकाय (गृहविज्ञान) विषय में पी-एच.डी. के पंजीयन हेतु प्रस्तावित शोध-प्रारूप की संक्षिप्त रूपरेखा

शीर्षकः 'सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का शिशु मृत्यु-दर पर प्रभाव : भोजपुर जिला के सन्दर्भ में'

प्रस्तावना : आधुनिक भारत में जनसंख्या अध्ययन महत्त्वपूर्ण हो गया है, ताकि भारत के विभिन्न भागों में उच्च्य शिशु मृत्यु-दर को संग्रहित कर उसके प्रभावों को चिन्हित किया जा सके। यह कटु सत्य है कि हमारे देश के विभिन्न भागों में यह समस्या एक समान नहीं है। यह विभिन्न भौगोलिक, धार्मिक, ग्रामीण, शहरी, आदिवासी और गैर-आदिवासी क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न प्रकार से है तथा हिन्दू समाज के विभिन्न स्तरों में भी इसमें काफी भिन्नता है। यद्यपि मुस्लिम समुदाय में उच्च्य शिशु मृत्यु-दर काफी अधिक है, फिर भी उस समुदाय के बीच पायी जाने वाली विभिन्न जातियों के बीच अन्तर है। इस अध्ययन में भोजपुर जिला के निवासियों में शिशु मृत्यु-दर को स्पष्ट करना है।

यह सर्वविदित् है कि शिशु देश के बहुमूल्य धरोहर एवं भविष्य का आर्थिक एवं सामाजिक विकास के प्रतीक हैं। यदि देश को समुचित ढंग से विकास करना है, तो शिशुओं की देखभाल तथा सुरक्षित रखना आवश्यक है। परन्तु दुर्भाग्यवश दुनिया के लगभग दस मिलियन बच्चे अपने प्रथम जन्म दिवस के दिन ही मर जाते हैं (यू०एल०, 1983)। भारत में प्रत्येक तीन बच्चों पर एक बच्चा का वजन बहुत कम होता है तथा आठ में से तीन बच्चे जन्म के दिन ही मर जाते हैं। इसका अर्थ यह है कि अनुमानतः तीन मिलियन बच्चे प्रत्येक वर्ष इस कारण से मरते हैं कि उन्हें मौखिक दवाईयाँ तथा इमोनाइज्ड नहीं किया जाता है (यूनीसेफ, 1985)। प्रत्येक 50 सेकेण्ड पर एक शिशु का जन्म होता है, जिसका अर्थ होता है कि 6.2 लाख शिशु प्रतिवर्ष जन्म लेते हैं। लगभग 21 मिलियन बच्चे प्रत्येक वर्ष कम वजन के साथ पैदा होते हैं, जिसमें से 19 मिलियन बच्चे विकासशील देश में पैदा होते हैं। 3 में से 2 गर्भवती महिलाएँ एनेमिक होती हैं तथा उनमें

से अधिकांश कमजोर होती हैं।

सैद्धान्तिक रूपरेखा :

यहाँ पर भोजपुर जिला से सम्बद्ध शिशु मृत्यु से संबंधित जो कारक प्रभावित एवं निर्धारित करते हैं, उसकी रूपरेखा की विवेचना आवश्यक है। शिशु मृत्यु-दर को प्रभावित करने वाले कारकों को दो श्रेणियों अर्थात् जैविक एवं सामाजिक वातावरण में विभक्त किया जा सकता है। जैविक कारक में जनांकिकी विशेषताओं, यथा – उम्र, यौन इत्यादि एवं सामाजिक वातावरण में निवास के प्रकार, स्वच्छता की दशा, विवाह, शिक्षा, व्यवसाय इत्यादि को सम्मिलित किया जाता है।

उद्देश्य :

प्रस्तुत अध्ययन का मुख्य उद्देश्य शिशु मृत्यु-दर एवं उसके मुख्य कारकों का अध्ययन करना है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, समाजीकरण, जनांकिकी, सामुदायिक स्वास्थ्य सेवा तथा पोषाहार शिशु मृत्यु-दर को प्रभावित करने वाले महत्त्वपूर्ण कारक हैं। यह अध्ययन भोजपुर जिला के शहरी एवं ग्रामीण समाज तक ही सीमित है। भोजपुर जिला मुख्यालय आरा में स्थित शहरी समाज गंदी बस्तियों, झोपड़ियों तथा उच्च एवं मध्य कोटि के भवनों इत्यादि से घिरा हुआ है। यहाँ पर साफ-सफाई व्यवस्था सिर्फ उच्च कोटि के मुहल्लों में ही उपलब्ध है, जबकि अन्य जगहों पर शौचालय टैंक एवं खुला मैदान पाया जाता है। सरकार द्वारा प्रत्येक ब्लॉक के ग्रामीण इलाके में ओ०डी०एफ० लागू करना है और कागज पर यह कार्य पूरा भी कर लिया गया है, जबकि सच्चाई यह है कि यह दिखावा मात्र ही है, अभी पूर्णरूपेण यह कार्य सम्पन्न नहीं हो पाया है।

समस्या से संबंधित किसी भी वैज्ञानिक अध्ययन में उद्देश्यों को अध्ययन पूर्व निश्चित एवं निर्धारित कर लिया जाता है। यह अध्ययन भी एक वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित अध्ययन होगा। इसका उद्देश्य प्रमुख रूप से यह होगा –

1. भारत की जनांकिकी का संक्षिप्त परिचय।
2. भारत की जनसंख्या वृद्धि का विस्फोट तथा उससे संबंधित शिशु मृत्यु-दर की विवेचना।

3. निदर्शन में सम्मिलित उत्तरदाताओं की सामाजिक, आर्थिक विशेषताओं की विवेचना करना।

4. fl kl kqe R; qदर को सामाजिक मूल्यों एवं विकास दर के आधार पर निश्चित एवं निर्धारित करना।

5. शिशु मृत्यु-दर पर सामाजिक, आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा का किस सीमा तक प्रभाव पड़ा है, का अध्ययन करना।

तथ्य संकलन विधि :

तथ्यों का संकलन किसी भी अनुसंधान की आधारभूत क्रिया है। तथ्य संकलन की क्रिया की परिशुद्धता एवं व्यापकता पर ही तथ्यों का विश्लेषण एवं व्याख्या की सफलता आधारित है। यदि संकलन तथ्य अशुद्ध एवं अपर्याप्त होते हैं, तो उनसे प्राप्त निष्कर्ष भी भ्रामक हो सकते हैं। अतः तथ्य संकलन की क्रिया में सतर्कता अति आवश्यक है। सामाजिक अनुसंधान में तथ्य संकलन के दो स्त्रोत हैं – प्राथमिक एवं द्वितीयक।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध हेतु सर्वेक्षण तथ्य संकलन के लिए निर्मित की गयी साक्षात्कार अनुसूची में संचरित एवं असंचरित दोनों प्रकार के प्रश्नों को रखा जायेगा। उत्तरदाताओं की जाति, व्यवसाय, आर्थिक स्थिति, परिवार की संरचना, परिवार की शिक्षा एवं अभिभावक की अभिवृत्ति के साथ-साथ शिशु मृत्यु से संबंधित प्रश्नों की रचना की जायेगी।

उपकरण :

बच्चों के विकास में सामान्यतः स्वास्थ्यकर वातावरण निर्माण करने में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। महिलाएँ शिशुओं एवं बच्चों पर समुचित ध्यान केन्द्रित कर सामाजिक विकास की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती हैं। प्रस्तुत अध्ययन शिशु मृत्यु-दर से संबंधित होगा। अध्ययन भोजपुर जिला के शहरी एवं ग्रामीण समाज में किया जायेगा। अध्ययन में भारतीय और विदेशी शोधप्रज्ञों द्वारा किये गये अध्ययनों एवं उनके तथ्यों को इस रूप में समाहित किया जायेगा, ताकि जनसंख्या नियंत्रण, स्वास्थ्य, कल्याण योजना, खाद्य नीति, जलापूर्ति, नागरिक सुविधाएँ एवं अन्य संबंधित योजनाएँ स्पष्ट हो सकें।

यूनिसेफ के अनुसार 1981 में अनुमानतः लगभग 160 मिलियन भारत की जनसंख्या का 23.7 प्रतिशत कुल जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है। 1971 से 1981 की अवधि में अर्थात् प्रत्येक दशांक पर 50 मिलियन जनसंख्या की वृद्धि हो जाती है, जबकि सामान्यतः 25 प्रतिशत जनसंख्या में वृद्धि होती है। उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि शिशु मृत्यु का सबसे महत्त्वपूर्ण कारक आर्थिक स्थिति है। भारतीय समाज में महिलाओं की शिक्षा बालकों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है, लेकिन हमारे समाज में महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नहीं है।

अध्ययन समीक्षा :

शिशु मृत्यु किसी समुदाय या समाज की सामाजिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य संबंधित स्थिति का एक संवेदनशील सूचक के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसे सामान्यतः जनस्वास्थ्य, पर्यावरण सफाई, सामाजिक, आर्थिक विकास, व्यक्तियों का मानव मूल्यों के प्रति मनोवृत्ति को परिलक्षित करता है। अतः विकासशील देशों में शिशु मृत्यु को समझना आवश्यक हो जाता है। उच्च शिशु मृत्यु-दर मानव दुर्दशा को इंगित करता है। शिशु मृत्यु एवं अनेक जनांकिकीय, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण कारकों के प्रभाव के सम्बन्धों को स्पष्ट करना आवश्यक है। हमारे देश में मृत्यु से संबंधित अध्ययन अधिकांशतः जनगणना, निदर्शन, पंजीकरण योजना, अस्पताल पर आधारित तथ्य, राष्ट्रीय निदर्शन, सर्वेक्षण इत्यादि एवं थोड़ा बहुत सिर्फ मृत्यु पर किये गये अध्ययन से प्राप्त होता है। शिशु मृत्यु-दर पर अनेक अध्ययन हुए हैं। चन्द्रशेखर (1972), वैद्यनाथन (सम्पादक) (1972), जैन (1974), अग्रवाल (1975), कुलकर्णी (1975), कोहली (1977) इत्यादि विद्वानों ने शिशु मृत्यु पर कई अध्ययन किये हैं। देसाई के अनुसार अनेक ऑफिशियल प्रकाशन ऐसे हैं, जो पंजीकरण व्यवस्था पर निर्भर हैं, जो कि तथ्यों को स्पष्ट नहीं करते हैं। इसलिए इन तथ्यों के आधार पर किसी निष्कर्ष पर पहुँचना सम्भव नहीं होता है।

उपर्युक्त अध्ययनों के अतिरिक्त भारत के विभिन्न भागों में प्राथमिक तथ्यों के आधार पर शिशु मृत्यु से संबंधित अध्ययन किये गये हैं। साइमन तथा एमकर ने उत्तरप्रदेश में अध्ययन किया और बताया कि मृत्यु के लिए अनेक संबंधित कारक हैं, जैसे

– टेटनस, न्यूनेट्रम, जिसे अधिकांश अध्ययनों में सम्मिलित नहीं किया गया है। भारत के राज्य उत्तरप्रदेश में शिशु मृत्यु की घटनाएँ सबसे अधिक होती रहती हैं अर्थात् 1000 में से 200 शिशुओं की 5 वर्ष के पहले ही मृत्यु हो जाती है। साइमन ने बताया है कि अधिकांशतः शिशु टेटनस, न्यूनेट्रम, तथा अवैज्ञानिक प्रसव के कारण मर जाते हैं, जैसे – नाभि काटने में साफ चाकू का प्रयोग न करना, अप्रशिक्षित एवं गंदी दाई, अस्वास्थ्यकर सुविधाओं का प्रयोग, अत्यन्त सामाजिक-आर्थिक दयनीय स्थिति, अस्वस्थ गर्भवती, निम्न सफाई व्यवस्था इत्यादि।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि शिशु मृत्यु के लिए सामाजिक एवं शैक्षणिक कारक उत्तरदायी हैं। भारत विभिन्न संस्कृतियों वाला देश है। कुछ परिवारों में यह विश्वास पाया जाता है कि यदि नवजात शिशु की नाभि में गाय का गोबर लगा दिया जाय, तो टेटनस से बचा जा सकता है। इसी प्रकार माता को यह सलाह दी जाती है कि जन्म से चार घंटे तक नवजात शिशुओं को किसी प्रकार का स्तनपान नहीं कराया जाय। लेकिन अब चिकित्सकों द्वारा यह प्रमाणित किया जा चुका है कि नवजात शिशु को माँ का प्रथम दूध अवश्य पिलाया जाय, ताकि उसकी पाचन क्रिया संतुलित हो जाय। अतः कहा जा सकता है कि शैक्षणिक पृष्ठभूमि का महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध शिशु मृत्यु-दर से है।

अतः 'सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिवेश का शिशु मृत्यु-दर पर प्रभाव : भोजपुर जिला के सन्दर्भ में' के अध्ययन हेतु मूल स्त्रोत के रूप में मूल कृतियाँ, शासकीय रिपोर्ट एवं विभिन्न शिशु मृत्यु के रिपोर्ट्स, संबंधित पत्र-पत्रिकाएँ, समकालीन समाचार-पत्र, अभिलेखागार में उपलब्ध दस्तावेज एवं प्रकाशित पुस्तकें इत्यादि का प्रयोग किया जा सकता है।

शोध-प्रारूप की योजना :

प्रथम अध्याय : अध्ययन परिचय

द्वितीय अध्याय : अध्ययन समीक्षा

तृतीय अध्याय : अध्ययन : उद्देश्य एवं विधि

चतुर्थ अध्याय	:	भारत में जनांकिकी संक्रमण और शिशु-मृत्यु-दर
पंचम् अध्याय	:	निदर्शन का सामाजिक एवं आर्थिक विवेचन
षष्टम् अध्याय	:	शिशु-मृत्यु का जनांकिकीय एवं आर्थिक परिप्रेक्ष्य
सप्तम् अध्याय	:	पोषाहार एवं शिशु मर्त्यता
अष्टम् अध्याय	:	प्रजननता, स्वस्थ्य एवं शिशु-मर्त्यता
नवम् अध्याय	:	सामाजिक, शैक्षणिक कारक एवं शिशु-मर्त्यता
दशम् अध्याय	:	वैयक्तिक अध्ययन
एकादश अध्याय	:	सारांश तथा निष्कर्ष

<u>सन्दर्भ सूची</u> :–

1. के० महादेवन – भारत में शिशु एवं बाल मृत्यु का अध्ययन
2. एम० ओ० वाजकैफ – इन्फेन्ट मोर्टालिटी ऑफ इण्डियन मुस्लिम, नई दिल्ली, 1993
3. एस० चन्द्रशेखर – इन्फेन्ट मोर्टिलिटी इन इण्डिया, लंदन
4. आर० डी० अग्रवाल – इन्फ्लुएन्स ऑफ सइन्फैंट एण्ड चाइल्ड मोर्टालिटी इन इण्डिया, बैंकाक, 1975
5. पी० आर० ईस्टमैन – इन्फैंट मोर्टालिटी इन रिलेशन टू मन्थ ऑफ बर्थ (जर्नल)

Nikhat Perween

शोध-निर्देशक **शोधार्थी**

(निकहत परवीन)

रोल नं० – 12